21.नज़रे शाह काज़िम क़लन्दर
(बानी–ए–खानकाहे काज़मिया, काकोरी)

सुहैल काकोरवी*

शाह काज़िम हैं मोहब्बत का जहाँ,
जिन पे नाज़ाँ है रिसालत का जहाँ।

उन में है नूरे अली रंगे अली,
उन में रख़शाँ है विलायत का जहाँ।

रौज़ा–ए–पाक की पुरकैफ फज़ा,
जो कि है रूह की राहत का जहाँ।

क़ौल सब बाईसे बरकत उनके,
शायरी उनकी हलावत का जहाँ।

शाह काज़िम के गुलफ्शाँ अल्फाज़,
कल्बे इंसान की ज़ीनत का जहाँ।

उन के फैज़ान से कायम है वही,
आज तक उल्फत–ओ–राफत का जहाँ।

है तरीक़त की यहाँ रानाई,
और है हुस्ने शरीअत का जहाँ।

खानक़ह उनकी जहाँ रन्ज मिटें,
है 'सुहैल' ऐसा वो रहमत का जहाँ।

हज़रत शाह मोहम्मद ऱमोहेहम्मद काज़िम़म क़लंदर (रह0)

अल्फाज़ के समन्दर की रवानी (वेग), जज़्बों का शफ्फाफ (साफ) पानी, बातिन (अंतरमन) की ताबानी (चमक), मसलक़े मोहब्बत (प्रेम विधान) की सुल्तानी, फज़ाये रानाईये रूहानी (आत्मिकता के वातावरण का सौन्दर्य), ख़्यालों में यूसुफे सानी (सुंदर व्यक्तित्व), गंजीनए मआनी (अर्थों का ख़ज़ाना), बहारे लाज़वाल (अविनाषी शरदऋतु) से रंगीन निज़ामे इरफानी (रूहानी व्यवस्था), तखईल (कल्पना) में समावाते नूरानी (प्रकाशवान आकाश), काशिफे असरारे लामकानी (ईश्वरीय रहस्य खोलने वाला), खिरद (विवेक) के लिये सामाने हैरानी, जुनूने इश्क़ की कामरानी (सफलता), वुस्अते दीद की हश्र सामानी (देखने के विस्तार प्रलयजनकता), सना–ए–सूरते इंसानी (मानव की प्रशंसा का रूप), आईनाए जलवा–ए–रब्बानी (ईश्वरीय छटा), कुफ्रे मोहब्बत से इरतिकाये ईमानी (विश्वास के विलोम से विश्वास का विकास), अमवाजे याफ्त की तुग़यानी (ज्ञान की लहरों की बाढ़), वजूद (अस्तित्व) फैज़े बक़ाये लामहदूद (अनन्त) से लाफानी (अविनाशी), फुयूज़ो बरकात की फरावानी (कृपा और बहुलता की अधिकता), ये है हज़रत शाह मोहम्मद काज़िम क़लन्दर पर मेरा बयाने इमकानी (सम्भव कथन) जिनसे जुड़ा हुआ है ज्ञान और आन्तरिक पूर्णता का एक ऐसा अर्थपूर्ण बाग़ जिसकी हर क्यारी वास्तविक सौन्दर्य से आत्मा के हर्ष और आनन्द का सामान कल भी थी और आज भी है। हज़रत शाह मोहम्मद काज़िम क़लन्दर का उज्जवल व्यवहार उनकी त्याग की भावना का प्रतिबिम्ब है। वो ऐसे परिवार से थे जहाँ पहले से ही ज्ञान के नगर के दरवाज़े खुले थे वो हज़रत अली के वंशज थे और पैग़म्बर हज़रत मोहम्मद (स0) ने फरमाया है कि ''मैं इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा हैं'' इसलिये उस द्वार पर उनका उत्तराधिकार स्पष्ट है। इस कारण उन्होंने उसपर अपनी योग्यताओं के अनुसार रंगीन नक़्काशी करके उसे और भी आकर्षित बना दिया। संसार ने पहले उनको अपनी ओर बुलाया फौज में

सिपाही की सूरत में उन्होंने अपनी जीविका अर्जित करने की तरफ कदम रखा लेकिन कुछ दिन बाद दुनिया से उनका दिल भर गया और वो दमगढ़, इलाहाबाद के एक महान सूफी बुजुर्ग हज़रत शाह बासित अली क़लन्दर के पास गये और उनसे आत्मिक आलोक प्राप्त किया और उन्होंने सूफीमत के उच्चतम स्थान 'क़लन्दर' होने का उन्हें वरदान दिया और ये भी आदेश दिया कि वो अपने वतन जाकर इस्लामी शिक्षाओं और आत्मिक ज्ञान का उदगार जनसाधारण में करें। शिष्टाचार को अपने अनुयाइयों का आचरण बनायें और उनके आत्मिक स्तर को साधारण सतह से ऊँचा उठायें और उन्होंने अपने धर्म गुरू की आज्ञा का भलीभांति पालन किया और एक ऐसी नियामावली तैयार की कि उनका स्थापित किया हुआ रूहानी पाठ्यक्रम आजतक जारी है और उस संत आश्रम में जिसके वो संस्थापक हैं, जहाँ आजतक अध्यात्म का विकास और विस्तार हो रहा है।

जहाँ तक संसारिक शिक्षा का सवाल है वो उन्होंने अपने समय के ज्ञानी लोगों से प्राप्त की और उसके बाद आन्तरिक शिक्षा में पूर्णता प्राप्त करके रहस्यवाद के विभिन्न स्वरूपों का भी ज्ञान प्राप्त किया और आत्मिकता की राह में यूं कदम रखा कि उनके पद चिन्ह से प्रकाश जारी हो गया जो लक्ष्य की प्राप्ति का स्रोत बन गया।
वो बृज भाषा के ज्ञाता थे और उसका पसंदीदा पहलू कृष्ण भक्ति उन्होंने अपनी काव्य धारा की एक सुन्दर लहर बनाया। कृष्ण की रंगारंग व्यक्तित्व के आलौकिक दीप्ति की भव्यता को प्रेम के प्रकाश से प्रज्जवलित करके कविता का संसार रच दिया।

अपने अंदर की प्रेरणा को यूं आवाज दी–

मोहन जागो उठो मुख धोओ,
द्वारे ठाड़े है लोग लुगाई।

'लुगाई'' वह गोपियाँ हैं जो इंसानी सूरत में अपने विराट रूप से अलग होकर आकुलता का रूपक बन गई है और कृष्ण स्वयं रहस्य का वो पर्दा हैं जिसका मध्य में होना करुणा का कारण है। प्रेमिकाओं और विराट सौंदर्य के बीच स्वयं शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर एक ऐसे वाचक है जो विरह तथा मिलन की सीमाओं से ऊपर उठकर असीम को प्राप्त करके आत्म संतोष के साथ इस प्रेम प्रसंग के ऐसे दर्शक है जो अपनी कविता के माध्यम से गोपियों की विरह का संदेश अधिकार सम्पन्न प्रियतम को पहुंचाते हैं तथा अपनी संतुष्टि का भी उल्लेख करते हैं–

काज़िम रा शुद कुर्ब हमेशा,
हमहु हैं कब से आस लगाई।

सौन्दर्य विलुप्त है इसलिये हृदय पीड़ा से अधीर है।

मेघा झर–झर लागे बरसन,
जाई कहो रघुबर सन।
तुम तो रहो परदेस मा बरसन
हम मर–मर दरसन को तरसन।
देओ न देओ केहू को दरसन,
पै रहो नित काज़िम के बरसन।

अपनी सफलता का ये बयान इसलिये है कि कुरान हुक़्म देता है अपने रब की उदारताओं का उल्लेख किया करो यह उस आदेश का पालन भी है और कृपा पर अनुग्रहीत होने का प्रमाण भी है।

सौन्दर्य अपने सारे वैभव के साथ अपनी संतुष्ट अवस्था में लीन जुदाई के काँटों पर तड़पते प्रेम की दशा से अनभिज्ञ होने का स्वांग किये है परन्तु कवि जो उस सौन्दर्य के बहुरूप से परिचित है प्रसन्नता के उस बिन्दु पर है

जिसके अर्जित करने की अभिलाषा गोपियों की आकुलता है। ज्ञान के प्रकाश में शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर पर अपने अंतर का सौंदर्य स्पष्ट हो गया है जिसने उनको शान्ति का अनुभव करा दिया है तथा हर्ष अधरों की मुस्कान से शब्दों में अनुमुद्रित हो गये हैं।

मैं बलि जाऊँ काज़िम के भाग्य के,
भली भई पिया घर उनकी समाई।

शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर का काव्य वह बांसुरी है जिसके बारे में मौलाना रूम ने कहा है कि वो जुदाई की व्यथा सुनाती है लेकिन यहाँ यह व्यथा स्वयं की नहीं प्रेम से पीड़ित उन हृदयों की है जो वास्तविकता से अनभिज्ञता के कारण अशान्त हैं तथा खुद कवि शान्त और आनन्दित है क्योंकि वह प्रेम का रहस्य पा गया है तथा उसकी दृष्टि एक ही बिन्दु पर केन्द्रित है।

पिया से मिला रहिएनित काज़िम,
मन लेयो सब से उठाये।
जा उठे गरे लागे काज़िम के,
जब वो मोहन कह के पुकारे।

और इन उपलब्धियों का कारण ये है–

जब से भई सतगुरु की कृपा
पिया पाये डारे गरे बाहे।
घर बाहर अब वही है काज़िम
हम नाहीं–नाहीं–नाहीं।

ईश्वरीय रहस्यों का ज्ञान होना हर्ष है और न जानना मन की पीड़ा है। हज़रत शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर के बीच से ''मैं'' और ''तुम'' का अंतर मिट गया है इसीलिये सफलता की ज्योति से उनके शब्द जगमगा रहे हैं।

हज़रत शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर संत आश्रम तकिया शरीफ़ के संस्थापक हैं। कोई भी निर्माण चिरस्थाई तब होता है जब उसकी नीव मज़बूत हो, उन्होंने इस रूहानी व्यवस्था का दीप तेल के स्थान पर अपने त्याग के रक्त से प्रज्जवलित किया था जिसको विपरीत दिशा में चलने वाली हवायें कभी बुझा न सकीं बल्कि उसका आलोक समय के परिवर्तन के साथ बढ़ता गया।

उनके सारे उत्तराधिकारी जिनके नाम क्रमशः शाह तुराब अली कलंदर, शाह हैदर अली कलंदर, शाह अली अकबर कलंदर, शाह अली अनवर कलंदर, शाह हबीब हैदर कलंदर, शाह तकी हैदर कलंदर, शाह अली हैदर कलंदर, शाह मुस्तफा हैदर कलंदर हुए, वर्तमान में शाह मुस्तफा हैदर कलंदर के ज्येष्ठ पुत्र शाह ऐनुल हैदर कलंदर 'ज़िया मियाँ' इस आश्रम के सज्जादानशीन हैं। यह सारे संत अपने अपने जीवन काल में शाह मोहम्मद काज़िम कलंदर की परम्पराओं को सुदृढ करते रहे, प्रेम, मानवता, त्याग, स्वयं को नकारने का जो चलन सूफियों की विशेषता रही है वह वर्णित यहाँ के सारे उत्तराधिकारियों में विद्यमान थी और आज भी है। कलंदर मुस्लिम सूफी मत की उच्चतम उपाधि है जो शाह मोहम्मद काज़िम कलंदर को अपने गुरू से मिली और वही सब में हस्तांतरित होती रही।

आज राष्ट्रीय एकीकरण एक नारा बन गया है जिसको दिलों में स्थापित करने के लिये आन्दोलन चल रहे हैं परन्तु अब से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्ण कृष्ण भक्ति के प्रति अपने समर्पण से शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर ने उसे व्यवहारिक एकीकरण का स्वरूप दिया और सौहार्द की भावना का प्रवाह प्रकृतिक रूप से हुआ। नवाब आसिफुद्दौला के मंत्री महाराजा टिकैत राय के

अतिरिक्त बहुत सारे हिन्दू उनके श्रृद्धालु थे। मुसलमानों के बीच भी जो इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध परम्परायें पनप गई थीं उनको समाप्त किया। सत्य प्रेम और मानवता का प्रचार प्रसार किया। जनमानस की समस्याओं का समाधान तथा उनके दुखों का निवारण अपनी आत्मिक शक्ति से करने के हर सम्भव प्रयास किये और इसीलिये आज तक उनके बैठने का स्थान पर उच्चतम विशेषताओं से सुसज्जित लोग असीन होते रहे हैं जिन्होंने अंतरमन से आत्मा को तृप्त कर दिया।

शाह मोहम्मद काज़िम कलंदर ने हज़रत मोहम्मद (स0) के समक्ष उनकी महिमा में एक ठुमरी में ये अनुरोध किया था–

रख ले लाज दोऊ जग मा काज़िम की,
दे जो माँगे दरस भिखारी।

उनको वो दिव्य दृष्टि प्राप्त हुई कि जिस दर्शन की अभिलाषा थी वो हुए और दीन दुनिया उसकी स्वीकृति के कारण संवर गये उन्होंने परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्ति को जीवन का लक्ष्य बनाया और सारी इच्छाओं का बलिदान किया बस यहीं इच्छा रही–

कृपा कर संग रहो काज़िम के,
तन मन की कर दूर बलईयाँ।

यह प्रार्थना ऐसी स्वीकार हुई के उनके आशीष वचन से उनके पास आने वालों के तन मन के विकार दूर हुए। जो सरलता और सरसता उनके जीवन में थी वही उनकी काव्य शैली में भी हैं। उन्होंने कहा था कि संगीत के शौक और मौत के डर ने संसारिक मोह से त्याग का मार्ग दिखाया। संगीत की स्वर लहरी से उनकी कविता आत्मा के उत्थान के स्त्रोत आज तक प्रदान

कर रही है। शाह मोहम्मद काज़िम कलन्दर की कविता को भक्ति में श्रृंगार रस के साम्राज्य की प्रभुसत्ता कहा जा सकता है।
खानकाहे काज़मिया एक अनुपम क्षितिज है जो ज्ञान के सूर्य और आत्म ज्ञान के शीतल चन्द्रमा से अलंकृत है जिससे विवेक और मन की पृथ्वी पर उजाले हैं। अंधकार से मुक्ति है और निर्वाण की जगमगाहट है।

हज़रत शाह मोहम्मद काज़िम कलंदर का उर्स काकोरी में चाँद के चौथे महीने की 20, 21, 22 को पारम्परिक वैभव के साथ होता है जिसमें कुरान पाठ और कव्वाली की सभायें सम्पन्न होती हैं।

*अल्लामा सुहैल काकोरवी हिन्दी, उर्दू, फ़ारसी और अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध शायर एवं विद्वान हैं|